Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue March 2021 | Impact Factor 4.115

वैश्विक स्तर पर हिन्दी : विस्तार एवं संभावनाएं

लीना गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी

हिन्दी का इतिहास उतना ही भव्य है जैसा कि विश्व की किसी भी उन्नत भाषा का हो सकता है। इसकी भव्यता के कारण ही सुधीर पचौरी ने लिखा था कि - "हिन्दी भाषा के बारे में सोचते लिखते रहने के कारण इतना तो अब मैं कह सकता हूं कि हिन्दी इस वक्त हमारी भाषाओं के बीच अधिकतम जनतंत्र है।" (सुधीर पचौरी: पृष्ठ 50) आठवीं शताब्दी से हिन्दी साहित्य का इतिहास शुरू होता है। तब से अब तक ना जाने कितने काव्य निर्माता हुए जिनकी कृतियां आज भी हमारी दिनचर्या का जैसे हिस्सा है, लेकिन इतने पर भी हमें यही संतोष नहीं होता तो यह अच्छे लक्षण है।

मन से मन का फासला कर खत्म,
खुद की राह तकती
बच्चे की किलकारी में,
यकायक सी झलकती
सबको जीवन सूत्र देकर जो
खुद जीवंत होने की करती अभिलाषा
आओ पिरोंए फिर से अपनी हिन्दी भाषा
आओ सजाएं फिर से अपनी हिन्दी भाषा।

भारतीयों की पहचान जिसे हम हमेशा छुपाना चाहते हैं, आखिर क्यूं ? यह प्रश्न हमारे लिए एक यक्ष प्रश्न है। इस प्रश्न का जवाब शायद हम में से किसी के पास नहीं या सबके पास है। क्योंकि हम सब यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि हिन्दी भाषा किसी परिचय की मोहताज नही है। "अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन के 35वें अधिवेशन में कहा गया था कि हमारा देश अब वह नही रहा जो सदियों से चला आ रहा था "। (35वें अधिवेशन का वक्तव्य)

हिन्दी पौराणों की भाषा रही है। जहां से ना जाने कितनी भाषाओं ने जन्म लिया है। हिन्दी को विभिन्न भाषाओं की उत्पत्ति का स्तोत्र माना जा सकता है। किसी भी भाषा का ज्ञान हिन्दी के बिना सम्भव नहीं है। हिन्दी की लिपि देवनागरी लिपि है जिसे विश्व में सबसे विस्तृत लिपि का दर्जा प्राप्त हो चुका है। जब हिन्दी की जन्म दात्री इतनी विस्तृत है तो वह स्वयं कैसे निकृष्ट कोटि की हो सकती है। विभिन्न सैद्धांतिक विषयों की उत्पत्ति एवं विकास के नींव हिन्दी है इसका प्रमाण हमें विज्ञान और गणित से मिलता है क्योंकि जीरो का आविष्कार ना होता तो गणित का आज विश्व में कोई ज्ञाता न होता।

भारत की जनसंख्या विश्व में दूसरे नंबर पर है इतने बड़े देश की मुख्य भाषा हिन्दी नि:संदेह लोकप्रियता की परिचायक है। इस भाषा ने अपने साहित्य और शोध कार्यों से सबको अपनी ओर आकर्षित किया है। दूरदर्शन और मीडिया की चर्चा करें तो हिन्दी में प्रदर्शित होने वाले चलचित्र एवं धारावाहिकों ने विश्व भर के लोगों के दिलों में जगह बनाई है। इस तथ्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है कि भारतीय फिल्म जगत की मुख्य आय अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों से ही बनती है।" पर्यटन स्थलों में नंबर वन रहने वाला भारत विदेशी लोगों को अपनी प्राकृतिक सुंदरता की ओर आकर्षित करता है। " (जवाहरलाल कौल) जिसके कारण विदेशी भारत में आना चाहते हैं और यहां की भाषा और संस्कृति से आत्मसात करना चाहते हैं।

यदि "इंटरनेट की बात करें तो एक समय था जब व्हाट्सएप में भारत के झंडे को भी स्थान प्राप्त नहीं था। परंतु वर्तमान में भाषा अनुवाद में पहला नाम हिन्दी का लिया जाता है। इसी तरह व्हाट्सएप जिसका आज के समय में कोई सानी नहीं है।" (सुधीर पचौरी:पृष्ठ 16)

PURVA MIMAANSA

उन्होंने हिन्दी के महत्व को देखते हुए अपना चित्रित सॉफ्टवेयर यानी सिमीली संपूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया कितनी अजीब बात है ना कि चीज तो विदेशी है परंतु सबसे अधिक प्रयोग इसे भारत में किया जाता है। या ये कहें कि विदेशी भारत पर निर्भर करते हैं।

दरअसल भारत की सांस्कृतिक एवं आर्थिक सुदृढ़ता को देखते हुए विदेशी हिन्दी को अपनाकर भारत से जुड़ने का प्रयास लगातार कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर जैसे "पेरिस विश्वविद्यालय में हिन्दी लेने वाले छात्रों की संख्या चौगुनी हो गई है। तिब्बती भाषा में हिन्दी शब्दों को सीधे लेने की परिपाटी नहीं है, किंतु उनकी परिभाषाएं आयुर्वेद,ज्योतिष और दर्शन में हिन्दी के सहारे बनी है और भविष्य में साइंस की परिभाषाएं भी उसी के सहारे बन रही हैं।" (डॉ पवन कुमार जैन) तो फिर क्यूं ---क्यूं आज हिन्दी को पूर्णतः एक विश्व भाषा की उपाधि प्राप्त नहीं है?

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि अगर देश को जोड़ना है तो इसे राष्ट्रभाषा हिन्दी के द्वारा ही एक सूत्र में बांधा जा सकता है परंतु कुछ व्यक्ति अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए इसे आज भी राष्ट्रभाषा नहीं मानते और ना ही बनने देना चाहते हैं। वह इसे अछूत भाषा बनाकर अपने स्वार्थों की सिद्धि कर रहें हैं। जापान जैसे देश आज विकसित है उसका एक कारण यह माना गया है कि यह देश उच्च शिक्षा अपने देश की भाषा में प्राप्त करते हैं और सफलता पाते हैं। इसलिए भारत में उच्च शिक्षा के रूप में राष्ट्रभाषा हिन्दी को ना अपनाया जाना ही शायद सबसे बड़ी कमी है। हमारे यहां हिन्दी को छोड़कर अन्य विषयों पर होने वाली संगोष्ठियां सदैव अंग्रेजी भाषा में ही संपन्न होती है।

यहां तक कि मनोरंजन की बात लें तो बड़े पर्दे पर फिल्मों को प्रदर्शित करने के लिए दूसरी भाषाओं का सहारा लेना पड़ता है। वर्तमान में हिन्दी हीनता से ग्रसित होती जा रही है। यूं तो एक तरफ हम देशभक्ति और संस्कारों की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं फिर क्यूं चार लोगों के संगठन में हमारी हर सभ्यता और संस्कृति को प्रदर्शित करने का स्रोत अंग्रेजी बनती जा रही है। यहां तक किट्टी पार्टिज,बर्थडे के उपलक्ष पर भी हम छोटे-छोटे बच्चों का अंग्रेजी ज्ञान चेक करने से नहीं चूकते। कुल मिलाकर बात की जाए तो वर्तमान में योग्यता की परीक्षा में खरा उतरने का प्रमाण अंग्रेजी में बोलना है। घर आए मेहमान के सामने बच्चे से अंग्रेजी भाषा में कविताएं सुनाकर हम वाहवाही तो लूट लेते हैं। परंतु क्या हम आने वाली पीढ़ी के मन में भी हीनता की भावना तो पैदा नहीं कर रहे और उनके सामने अंग्रेजी भाषा को उच्च कोटि का प्रमाणित कर रहे हैं। यह हीनता उसके सामने जीवन भर चलती है। जिसके कारण एक बच्चा बचपन से ही विदेशी भाषाओं की ओर खींच रहा है। बचपन में ही जब हम उनकी सोच पर अन्य भाषाओं से आघात करते हैं तो उनके शब्द रास्ते से भटक जाते हैं और वह अपने क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं।

हम सब जानते हैं कि भाषा संचार एक सीधी प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत पहले सोच- विचार -वाणी -शब्द -कर्म -फल आता है, परंतु आज की मनोदशा ऐसी है कि हम विचार तो हिन्दी में करते हैं। पर भावों का उद्गार अंग्रेजी में रखा जाता है जिससे सीधे तौर पर हमारे फल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शायद यही कारण है कि हर क्षेत्र में संपन्न होने के बाद भी भारत को पिछड़े देशों की गिनती में रखा जाता है। हिन्दी विचारों और व्यवहारों की वाहिका होने के साथ-साथ राष्ट्र की अस्मिता होती है। विश्व में चीनी भाषा के बाद सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। लेकिन आजादी के 70 वर्षों के बाद भी हिन्दी को वह सम्मान व गौरव नहीं मिला जिसकी अधिकारिणी है। उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी को विश्व-भाषा के रूप में किस प्रकार प्रतिष्ठित किया जाए, यह विचारणीय विषय है। यह सही है कि हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में विश्व भाषा और विश्व लिपि बनने की अपार संभावनाएं हैं। संविधान के अनुसार राजभाषा होते हुए भी हम अपने ही देश में व्यवहारिक रूप में इसे राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं कर पाए हैं। यह सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर सदैव उपेक्षा की शिकार रही है। इस प्रकार की चुनौतियों का सानुकूल निदान करते हुए हिन्दी को किसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई जाए, यह हिन्दी प्रेमियों के लिए एक ज्वलंत समस्या है। विश्व भाषा के रूप में हिन्दी के समृद्ध शब्दकोश को समृद्धतर करने की आवश्यकता है। विज्ञान और तकनीकी के नए आयामों को देखते हुए नए शब्दों को गढ़ने की और विदेशों में संपन्न हुए अनुसंधानों के लिए प्रयुक्त शब्दावली को ज्यों का त्यों या कुछ संशोधन के साथ आत्मसात करने की महती आवश्यकता है। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हिन्दी भाषियों की भाषागत कुंठा को कैसे समाप्त किया जाए, दैनन्दिन जीवन में हिन्दी के प्रयोग की मानसिकता को कैसे बढ़ाया जाए और राष्ट्र तथा विश्व के युवाओं को रोजगार के माध्यम से, विज्ञान एवं तकनीकी के माध्यम से तथा साहित्य और मानविकी अनुशासनों के माध्यमों से सीधे तौर पर हिन्दी भाषा से कैसे जोड़ा जाए।

PURVA MIMAANSA

हिन्दी भाषा हमारे भारत की आधी भूमि और लोगों की भाषा है। इसलिए हमारे साहित्य सेवियों को अपने दायित्व को भलीभांति समझना चाहिए और ऐसे साहित्य का निर्माण करना चाहिए जो भारत और विश्व में हिन्दी के मस्तक को ऊंचा रख सकें।

हिन्दी को इस नए युग में अपने साहित्य की पूर्णता को प्राप्त करवाना है। सोच परिवर्तन के बन जाने की देर है, साहित्य का सृजन तो स्वतः होने लगेगा। (राहुल सांकृत्यायन) विश्व पटल पर हिन्दी का विस्तार होने की संभावनाएं बढ़ने लगेंगी। उसकी सबसे बड़ी मांग स्कूलों और कॉलेजों की पाठ्यपुस्तकों के रूप में होगी, जिसके लिए प्रकाशक सब कुछ करने के लिए तैयार है। हिन्दी माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त किए लोगों की संख्या वृद्धि के अनुसार हिन्दी के विस्तार की संभावनाएं बढ़ सकेगी।

संदर्भ सूची

हिन्दी का नया जन क्षेत्र - सुधीर पचौरी (पृष्ठ 50)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 35वें अधिवेशन का वक्तव्य

हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव - जवाहरलाल कौल

हिन्दी का नया जन क्षेत्र - सुधीर पचौरी (पृष्ठ 16)

विदेशों में हिन्दी - डॉ पवन कुमार जैन

राष्ट्रभाषा हिन्दी - राहुल सांकृत्यायन

PURVA MIMAANSA